मेरा पसन्दीदा चित्र

शिकारी का पीछा करता हुआ जानवर

अशोक भौमिक

स्पष्ट झलक देने के लिए मूल चित्र को कम्प्यूटर से उभारा गया है।

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से कुछ ही दूर एक दर्शनीय स्थल है – भीमबेटका या भीमबैठका! आज से हज़ारों साल पहले यहाँ आदिमानव रहा करते थे। पत्थर के पहाड़ों के बीच स्थित उनके रहने की जगह को हम शैलाश्रय भी कहते हैं।

इन शैलाश्रय में आज से लगभग दस हज़ार साल से भी पहले ऐसे लोग रहते थे जो चित्र भी बनाते थे। यहाँ की दीवारों पर आज भी इनके द्वारा बनाए गए चित्र मौजूद हैं। इन शैलचित्रों से उन लोगों के जीवन के बारे में, उनकी रचनाशीलता के बारे में पता चलता है। साथ ही चित्रों के ज़रिए अपनी बात कहने की उनकी असाधारण क्षमताओं से भी हम परिचित होते हैं। पर, जब हम पाते हैं कि इन चित्रों को बनाने वालों के पास अपनी कोई लिपि नहीं थी, तो हमारे लिए इन चित्रों का महत्व और भी बढ़ जाता है। ये चित्र, किसी कलाकार की कला-निपुणता दिखाने के लिए या खुद को अन्य चित्रकारों से बेहतर सिद्ध करने के उद्देश्य से नहीं बनाए गए थे। पर, शायद अपने समाज के अन्य लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए बनाए गए इन चित्रों में कला-मूल्यों की अनदेखी भी नहीं की गई थी।

भीमबेटका का एक दृश्य

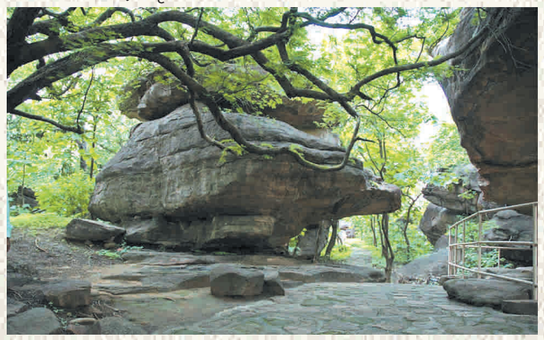

भीमबेटका के इन तमाम चित्रों में एक चित्र ऐसा है जो अपनी कलात्मकता और सशक्त सम्प्रेषणीयता के लिए हमें आश्चर्यचकित कर देता है। चित्र का शीर्षक है – शिकारी का पीछा करता हुआ जानवर! कई कारणों से यह मुझे सबसे प्रिय है।

आइए, इस चित्र को ज़रा गौर से देखें!

चित्र के बीच में एक जानवर है जो खास जंगली भैंसे (बाइसन) के रूप में पहचाना जा सकता है। इसके घुमावदार सींग, खुर, शरीर पर उगे बाल (पीठ पर बने बालों को देखें) और माथे का खास आकार भी चित्र में स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। हम आज जानते हैं कि जंगली भैंसे बेहद खतरनाक होते हैं क्योंकि इनके बारे में पूर्वानुमान लगाना कठिन होता है। अर्थात् जो भैंसा अभी शान्त खड़ा दिख रहा है वह अगले ही क्षण शायद पूरी ताकत से हमला कर सकता है। जंगली भैंसा काफी तेज़ी से दौड़ सकता है (लगभग 50 कि.मी. प्रति घण्टा)। यह अपने शरीर के ज़्यादा वज़न के चलते जिस किसी जानवर या पेड़ या दीवार पर अपनी पूरी गति से वार करता है तो उस वार का प्रभाव एक हज़ार किलो का होता है।

इन तथ्यों को जाने बगैर भी इस चित्र का जंगली भैंसा अपने उस खास आक्रमण के ठीक पहले की मुद्रा में दिखता है। अन्य जानवरों की तुलना में चूँकि इसकी माँसपेशियों में लचीलापन कम होता है, इसलिए दौड़ते हुए अपनी दिशा बदलना इसके लिए कठिन होता है। और शायद इसी कारण से जंगली भैंसा आक्रमण के पहले स्थिर होकर दिशा और गति तय करता है। इस चित्र में यह बात साफ दिखाई देती है। इस चित्र का दूसरा महत्वपूर्ण प्राणी एक शिकारी है, जो हाथ में भाला लिए हुए दौड़ रहा है, या यू कहें कि बेतहाशा या सरपट भाग रहा है। जंगली भैंसे और भागते हुए शिकारी को देखने से चित्र के एक अद्भुत पहलू से हम रू-ब-रू होते हैं – वह है अनुपात। भैंसे और मनुष्य की शारीरिक संरचना और उनकी ऊँचाइयों में जो सापेक्षता होनी चाहिए थी – अर्थात् मनुष्य की ऊँचाई निश्चय ही भैंसे से कुछ ज़्यादा ही होनी चाहिए थी। पर, चित्र में भैंसा मनुष्य से कई गुना ज़्यादा बड़ा है। इसमें संदेह नहीं कि चित्रकार ने ऐसा जानबूझ कर किया है। और ऐसा कर उसे अपने दर्शकों को (शायद कबीले की आने वाली पीढ़ियों) जंगली भैंसे की ताकत, उसकी दौड़ने की क्षमता के बारे में सचेत किया है। इस चित्र में शिकारी थोड़ा कॉमिकल या व्यंग्य चित्रात्मक-सा लगता है। इस शिकारी के दौड़ने की भंगिमा और उसका चूहे का मुखौटा दोनों, मिलकर चित्र में नाटकीयता पैदा करते हैं। यहाँ अनुमान लगाना कठिन नहीं कि शिकारी को चित्रकार ने चूहे का नकाब इसलिए पहनाया है जिससे शिकारी के दौड़ने की गति में चूहे जैसी तेज़ी दिख सके। साथ ही, वह जंगली भैंसे के सामने एक चूहे जैसा कमज़ोर दिख सके।

फोटो: अशोक भौमिक

मूल चित्र

चित्र में अपनी बात को प्रभावी ढंग से कहने के लिए भैंसे और शिकारी के बीच के अनुपात को एक खास सोच के साथ बदला गया है। साथ ही भैंसे और शिकारी की गतिविधियों के बारे में कम से कम रेखाओं व सपाट रंग के प्रयोग से ज़बरदस्त कलात्मकता पैदा की गई है। इससे चित्र न केवल अपनी सम्प्रेषणीयता के लिए बल्कि अपने कला-गुणों के लिए महान बना है।